द्‌वितीय अध्याय
नीरज के प्रमुख काव्य संग्रहों का परिचय

... KAR LIBRARY
...IVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

द्‌वितीय अध्याय

नीरज के प्रमुख काव्य संग्रहों का परिचय

प्रास्ताविक :-

हिंदी साहित्यजगत् के सूर्य के रूप में 'नीरज' जी को जाना जाता हैं। उन्होंने सन 1942 में काव्यसागर में छलाँग लगाई और सन 1944 में पहला रत्न बाहर निकाला । सन 1944 से लेकर अब तक वे काव्यसागर से रत्न निकालने का कार्य निरंतर करते आ रहे हैं।

समय - समयपर आनेवाली उनकी काव्यकृतियाँ समाज में तहलका मचाती रही हैं। विषय का पूर्ण ज्ञान और उसे प्रस्तूत करने की कला के कारण नीरज की काव्यसाधना निरंतर विकास की ओर बढती रही हैं।

उनकी रचनाँए इस प्रकार हैं -

1) संघर्ष - सन 1944
2) अंतर्ध्वनि - सन 1946
3) विभावरी - सन 1951
4) प्राणगीत - सन 1954
5) लिख लिख भेजत पाती - सन 1956
6) दर्द दिया है - सन 1956
7) बादर बरस गयो - सन 1958
8) नीरज की पाती - सन 1958
9) नदी किनारे - सन 1958
10) दो गीत - सन 1958
11) आसावरी - सन 1958
12) लहर पुकारें - सन 1959
13) मुक्तकी - सन 1960
14) गीत भी अगीत भी - सन 1963
15) हिन्दी रूबाइयाँ - सन 1963
16) नीरज के लोकप्रिय गीत - सन 1967
17) फर दीप जलेगा - सन 1970
18) तुम्हारे लिए - सन 1971
19) नीरज के लोकप्रिय गीत - सन 1975
20) कारवाँ गुजर गया - सन 1991

'कारवाँ गुजर गया' छोडकर उपर दी गई सभी रचनाओं में जो कविताएँ हैं, उन्हीं में से कई कविताओं को संकलित करके 'आज के लोकप्रिय हिंदी कवि नीरज' नाम से एक अलग काव्यकृति का निर्माण किया गया हैं, परंतू ये कविताएँ नीरज जी के प्रकाशित कविता संग्रहो में आरूढ (स्थानबद्‌ध) होने के कारण इस

काव्यकृति का अलग से नामनिर्देश करना गलत जान पड़ा। साथ ही ऊपर दी गई रचनाओं में 'हिंदी रूबाईयाँ' यह कविताओं का संकलन है और 'लिख लिख भेजत पाती' यह कविताओं का अनुवाद हैं। बाकी रही सत्रह रचनाओं में 'नीरज के लोकप्रिय गीत' सन 1967 में प्रकाशित हुई हैं, जिसमें नीरज के प्रकाशित गीतों में से सिर्फ तैंतीस गीतों को चुना गया हैं। और सन 1975 में फिर से 'नीरज के लोकप्रिय गीत' प्रकाशित हुई, जिसमें नीरज के फिल्मी गीतों में से 91 गीत चुने गये। अब रही पंद्रह रचनाओं में से 'संघर्ष' को दोबारा प्रकाशित किया गया 'नदी किनारे' नाम से। 'अंतर्ध्वनि' को दोबारा प्रकाशित किया गया 'लहर पुकारें' नाम से और 'विभावरी' को दोबारा प्रकाशित किया गया 'बादर बरस गयो' नाम से।

उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार दिया जा सकता हैं -

2.1 नीरज के प्रमुख काव्यसंग्रहों का परिचय

2.1.1 'संघर्ष' अथवा 'नदी किनारे' :-

कवि नीरज के जीवन का पहला काव्यसंग्रह रूपी पुष्प सन 1944 में खिला, जिसका नाम था - 'संघर्ष'। इसी पुष्प का दूसरा जन्म सन 1958 में हुआ, तब उसका नाम रखा गया - 'नदी किनारे'। इस पुष्प का परिचय देते हुए कवि नीरज जी ने कहा है - " प्रस्तुत संग्रह 'नदी किनारे' सन 1944 में प्रकाशित हुए मेरे कविता संग्रह में उस काल की तुक बंदियाँ हैं जबकि मैं न तो काव्य के स्वरूप से ही और न कवि कर्म से ही परिचित था। किन्तू इतना संघर्ष पूर्ण था तब मेरा जीवन और उत्तरदायित्वों के पहाडों का ऐसा बोझ था मेरे सिर पर कि यदि मैं गाकर अपने भीतर का बोझ हल्का नहीं करता तो शायद टूट फूट कर रास्ते में ही कहीं गिर जाता। मैंने तब कवि बनने के लिए नहीं, अपने जीवन के सूनेपन को, अपनी ही आवाज से भरने के लिए गाया था। इसलिए पाठकों को इस संग्रह में भाषा, छंद, सर्वथा अनभिज्ञ, मेरे किशोर मन की छटपटाहट के अतिरिक्त और कुछ नहीं प्राप्त होगा - काव्य छल तो बिलकूल ही नहीं। " [1]

कवि के विचारों से ऐसा लगता है कि, 'संघर्ष' में चुनी गई कविताओं में उनको जीवन का अंकन है। क्योंकि उन्होंने स्वयं यह माना है कि, इस रचना की कविताएँ उनके संघर्षपूर्ण जीवन की उपज है। अपने दिल के दर्द को बाहर निकालने हेतु ही उन्हें गाना पड़ा। जिससे उन्होंने शांति का अनुभव लिया। इसी कारण कवि ने अपनी प्रथम कृति का नाम 'सघर्ष' रखा, जो बहूत अंशो में अर्थपूर्ण है।

समय के साथ जीवन का संघर्ष बढ़ने की जगह घटना ही चला गया और जीवन की नरमी को महसूस करने के पश्चात जब 'संघर्ष' का दूसरा संस्करण निकला, तो कवि ने नरमी का एहसास दिलाने वाला नाम रखना उचित समझा। इस नरमी के दयोतक 'नदी किनारे' के बारे में कवि के विचार हैं - " मेरी सर्व प्रथम कृति होने के नाते यह एक प्रकार से मेरे कवि जीवन का आमुख है यानी इस संग्रह में पहली पहली बार घर से बाहर निकलकर मैं नदी किनारे आया हूँ। आया भर हूँ नदी के तल से, कुछ बाहर निकालकरला नहीं पाया हूँ लेकिन बाहों में लहरों से खेलने की आकुल उत्सुकता अवश्य है। " [2]

'सघर्ष' और 'नदी किनारे' कविता संग्रह में किसी भी प्रकार का विशेष अंतर देखने में नहीं आता। दोनों में साठ कविताओं का संकलन है, जिसमें किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं किया गया। समर्पणवाले पृष्ठ में भी समानता देखने को मिलती है। सिर्फ डॉ. गुलाबराय की 'संघर्ष' की भूमिका 'नदी किनारे' से गायब कर दी गई हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि, नीरज संबंधि डॉ. गुलाबराय की भविष्यवाणी सत्य साबित होने लगी थी।

डॉ. गुलाबराय की भविष्यवाणी - " नीरज जी के रूदनमय गानों में निराशा की अन्तर्धारा, स्पष्ट रूप से झलकती है और वह जीवन के कटु अनुभवों से निःसृत हुई प्रतीत होती है। जहाँ अमृत ही विष बन जाय, वहाँ निराशा का होना स्वाभाविक ही है। अमृत को विष देनेवाली कौन सी घटनाएँ हैं, और कहाँ तक वे सत्य हैं, यह उनके वैयक्तिक जीवन का प्रश्न है। किन्तू इन कविताओं से एक ठेस का अनुमान होता है। "[3]

हो सकता है कि, 'संघर्ष' के बाद आनेवाली रचनाओं ने नीरज जी को लोगों की आँखों का तारा बना दिया। इसी कारण उन्होंने 'संघर्ष' को 'नदी किनारे' नाम से दोबारा प्रकाशित किया।

कुछ छोंटे से बदलाव छोड दिए जाते हैं, तो 'संघर्ष' और 'नदी किनारे' में समानता ही है। 'संघर्ष' और 'नदी किनारे' काव्यसंग्रहों में इन साठ रचनाओं को सम्मिलित किया गया है –

1 नीर्जन की नीरव डाली का मैं फूल,
2 कितना एकाकी मम जीवन,
3 अपनी कितनी परवशता है,
4 मुझको अपने जीवन में हा!,
5 कितनी अतृप्ति है जीवन में,
6 साथी सब सहना पड़ता है,
7 क्यों उसको जीवन भार न हो ?
8 मुझको जीवन आधार नहीं मिलता है,
9 तुमने कितनी निर्दयता की ?
10 क्यों रूदनमय हो न उसका गान ?
11 मन छुपकर वार करो,
12 खग उड़ते रहना जीवन भर,
13 चल चल रे थके बटोही,
14 मैंने बस चलना सीखा है,
15 लहरो में हलचल होती है,
16 मैं क्यों प्यार किया करता हुँ!
17 जीवन-समर जीवन समर !
18 जग ने प्यार नहीं पहचाना,
19 तब मेरी पीड़ा अकुलाई,
20 है नहीं दिखता तिमिर का छोर।,

21 इन नयनों से सदैव मैंने क्षार नीर झरते देखा है !,
22 कोई क्यों मुझसे प्यार करे !
23 मधु में भी तो छुपा गरल है !
24 रोने वाला ही गाता है,
25 मैंने जीवन विष पान किया, मैं अमृत मंथन क्या जानूँ,
26 धडक रही मेरी छाती है,
27 टूटता सरि का किनारा,
28 आज आँधी आ रही है,
29 मेरा कितना पागलपन था !,
30 अब तो मुझे न और रूलाओ !,
31 घोर तम अब छा रहा है !
32 अब तो उठते नहीं पैर भी कैसे चलता जाउुँ पथ पर,
33 पंथी तू क्यों घबराता है ?
34 तेर्री भारी हार हुई थी,
35 डगमगाते पाँव मेरे आज जीवन की डगर पर,
36 अब अलि - गुन - गुन - गान कहाँ है ?
37 फूल डाल से छूट रहा है !
38 फिर भी जीवन से प्यार तुझे,
39 फिर भी जीवन - अभिलाष तुझे,
40 भार बन रहा जीवन मेरा,
41 हाथ नहीं अब कोई चारा,
42 बादल का अंतर बरस रहा,
43 पेड़ गिरना चाहता है,
44 चुपके चुपके मन में रोऊँ,
45 पीर मेरे प्यार बन जा !
46 था न जीवन भार मुझको,
47 प्रियतमा क्यों इतनी निष्ठुरता ?
48 मधूर तूम इतना ही कर दो !
49 कर्तव्य पथ - कर्तव्य पथ !
50 हार न अपनी मानूँगी मै,
51 नभ में चपला चपल चमकती,
52 नष्ट हुआ मधुवन का यौवन,
53 विश्व न सम्मूख आ पाओगे,
54 आ गई आँधी गगन में,
55 अब दीपक बुझने वाला है,
56 माँझी नौका खोल रहा है,
57 आज माँझी ने विवश हो छोड दी पतवार,
58 मैं रोदन ही गान समझता,

तुम गये चितचोर, और
निकला नभ में एक सितारा।

'संघर्ष' में साठ छोटी - छोटी कविताओं को एकत्रित किया गया है, यह मत पूर्ण रूप से गलत साबित होता है। इस के लिए आवश्यक जानकारी को आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं –

'कितना एकाकी मम जीवन'	-	पाँच पंक्तियाँ
'निर्जन की नीरव डाली का मैं फूल'	-	सात पंक्तियाँ
'कितनी अतृप्ति है जीवन में'	-	सात पंक्तियाँ
'अपनी कितनी परवशता है'	-	सात पंक्तियाँ
'जीवन-समर जीवन समर'	-	बाइस पंक्तियाँ
'कर्तव्य पथ - कर्तव्य पथ'	-	बाइस पंक्तियाँ
'आज माँझी ने विवश हो छोड दी पतवार'	-	बीस पंक्तियाँ
'पेड़ गिरना चाहता है'	-	इक्कीस पंक्तियाँ
'सब साथी सहना पड़ता है'	-	पचीस पंक्तियाँ

तथा अधिकतर कविताओं में दस से अधिक पंक्तियाँ दिखाई देती है। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि, भावों को प्रकट करने के लिए जितने शब्दों की आवश्यकता है, उतने ही शब्दों का प्रयोग कवि ने किया है। यहाँ पर कविता का आकार महत्वपूर्ण नहीं, तो कविता के भाव महत्वपूर्ण है।

एक समीक्षक का मानना है कि, 'नदी किनारे' यह रचना कवि नीरज जी की प्रथम कृति है। परंतू इसके संदर्भ में दिए गये सभी तर्क वितर्क गलत साबित होते हैं, क्योंकि 'नदी किनारे' से पहले और 'सघर्ष' के बाद कवि ने छह काव्य कृतियों को प्रकाशित किया है।

इस रचना को 'संघर्ष' नाम दिया गया है, यह सौ फिसदी सही जान पड़ता है। क्योंकि इसमें कवि के संघर्षपूर्ण जीवन की उपज के रूप में कविताओं का निर्माण हुआ है।

2.1.2 'अंतर्ध्वनि' अथवा 'लहर पुकारे' :-

अंतर्ध्वनि का प्रकाशन कवि नीरज जी ने सन 1946 में किया अब प्रथम कृति का प्रकाशन होकर पूरे दो साल व्यतित हो चूके थे। लोगों को कुछ देने की लालसा और मन को खोलने की भावना का एकत्रित मिलाप ही अंतर्ध्वनि है। विचारों की तह तक पहुँचने के लिए पाठकों को समय रखने के लिए तेरह वर्ष का समय लिया। मन को छुनेवाले नाम के साथ ह्रदय पर राज्य करनेवाली भावनाओं को हमारे सम्मूख रखा, तो 'लहर पुकारे' नाम के साथ। इस नाम पर रोशनी डालते हुए कवि कहते हैं - " प्रस्तुत कृति 1944 - 46 के बीच लिखी हुई मेरी किशोर काल की कविताओं का संग्रह है जो पहले 'अंतर्ध्वनि' के नाम से प्रकाशित हुआ था। नाम के अतिरिक्त और भूमिका हटा देने के सिवाय, इस दूसरे संस्करण में और कोई परिवर्तन नहीं किया हैं। आशा है पाठकों ने इस संग्रह को जिस प्यार से इसके

पुराने नाम के साथ अपनाया था उसी प्यार से वे इसे इसके नये नाम के साथ भी अपनायेंगे। "[4]

'अंतर्ध्वनि' को दोबारा पाठकों मे समक्ष रखते समय कुछ बदलाव जरूरी थे। खूबसूरती बढाने के लिए नाम में परिवर्तन आया और लंबाई घटाने के लिए भूमिका को निराश करना पड़ा। परन्तु नारी के सुकोमल देह में बदलाव असह्य होगा, ठिक उसी प्रकार कविताओं के कृम और गठन में बदलाव असह्य माना गया। शायद सादगी को ध्यान में रखकर ही इस रचना को 'लहर पुकारे' नाम से सम्मानित किया गया। दिमागवालों के दिमाग में आया - " नदी किनारे आकर कवि को जो सबसे पहली अनुभूति हुई वह है लहरों के निमँत्रण की, और इन लहरों की - जीवन गति की पुकार से विवश होकर जो कुछ उसने उस काल में पाया वह उसके 'लहर पुकारे' संग्रह में संगृहीत है। "[5]

किसी पर दिल के आने के बाद उसकी चाहत बढ़ती ही जाती है। ठिक उसी तरह 'लहर पुकारे' की विशालता आकार और प्रभाव के साथ बढ़ती ही चली गई। किन्तु इसमें केवल छियालीस कविताओं को ही प्रकाशित किया गया।

वे इस प्रकार हैं –

1 पूर्ण होकर रूदन भी युग गान बनता है,
2 जय जय जय जयति हिन्द,
3 तब मानव कवि बन जाता है,
4 मधु पीते पीते थके नयन फिर भी प्यासे अरमान,
5 जीवन वहाँ खतम हो जाता,
6 उसकी प्यास कितनी प्रबल थी,
7 तुम और मैं,
8 क्या हुआ जो साथ छूआ,
9 दूंर मत करना चरण से,
10 अब तुम्हारे ही सहारे,
11 मैं तुम्हारे तुम हमारे,
12 प्राण ! परीक्षा बहुत कठिन,
13 अब तो ले लो प्राण शरण में,
14 प्रेम पथ,
15 पथ भ्रष्ट,
16 अंतिम यह अभिलाष हृदय में,
17 तब किसी की याद आती,
18 शैशव स्मृति,
19 खोया धन,
20 पथिक अकेला जीवन पथ पर,
21 करो वही जो तुमको भये,
22 रेखाएँ,
23 नर होकर कर फैलाता है,

24 साथी दुख से घबराता है ?
25 एक न एक दिवस आता है - जीवन के उपवन में पतझर,
26 मजदूर का स्वप्न,
27 किस्मत,
28 यदि,
29 हिम्मत मत हार रे !
30 मैं किसी के प्यार की झूटी कसम हूँ !
31 कब्र का दिया,
32 वह भी इस जग का मानव है !
33 मृत्तिका ही तू नही ओ दीपके ! गृह कांति भी है !
34 मैं किसी के चल चरण का चिन्ह हूँ !
35 पी कहाँ, पी कहाँ, पी कहाँ ?
36 जहाँ भी दो तिनके धर दिये वहीं बस गया नीड़ सुकुमार !
37 मै भूला भूला सा जग में क्या जानू मधु परिचय क्या है ?
38 विद्रोही
39 चलते चलते थक गये पैर फिर भी चलता जाता हूँ,
40 सजल सजल निज नील नयन घन !,
41 आज वेदना सुख पाती है,
42 एक दिन भी जी मगर तू ताज बनकर जी,
43 मेरे जीवन की संघ्या में नव दीप जलाये क्यों कोई ?
44 जन्म नव जब मुझे दो प्राण ! नर तन दो !,
45 कवि और हिटलर,
46 तुम फिर से मुझे बनओ !

तुलना की दृष्टि से देखा जाए तो दो कविताएँ हों या चाहे कविता संग्रह, दोनों में समानता का होना बहुत ही कठीन कार्य है। अगर कभी समानता देखने में आ जाए तो उसे मात्र संयोग माना जाएगा। इसी कारण 'संघर्ष' और 'अंतर्ध्वनि' में विभिन्नता या विविधता का होना तर्क संगत माना जाएगा। साथ ही यह जानना जरूरी है कि, दोनों में किस प्रकार का अंतर दिखाई देता है।

दोनों में प्रमुख अंतर यह है कि, 'संघर्ष' में अधिक कविताएँ छोटी थीं और 'अंतर्ध्वनि' में अधिक कविताएँ बडी हैं। साथ ही, इसमें नवीन पहलुओं का चित्रण और उद्‌घाटन किया गया है। इस कविता संग्रह का विश्लेषण इस प्रकार है --

'तुम और में' - तीन पृष्ठ
'खोया धन' - तीन पृष्ठ
'प्रेम पथ' - चार पृष्ठ
'विद्रोही' - चार पृष्ठ
'मजदूर का स्वप्न' - कथा काव्य
'शैशव स्मृति' - कथा काव्य

'कवि और हिटलर' - कथा काव्य
'पथ भ्रष्ट' - गद्य काव्य

इसमें 'प्रेम पथ' और 'विद्रोह' यह चार पृष्ठों की कविताएँ आकार की दृष्टि से सबसे बड़ी मानी जायेंगी। 'पथ भ्रष्ट' कविता में संवादों की तरह वार्तालाप दिखाया गया है। और प्रश्न - उत्तर शैली का प्रयोग किया गया है। अतः यह पद्य रचना न लगते हुए एक गद्य अंश लगता है। सभी कविताओं को देखने के पश्चात यह अनुमान लगाया जा सकाता है कि, हर एक कविता लगभग दो - तीन पृष्ठों की रही है। अंतर्ध्वनि काव्यकृति में छोटी कविताएँ, बड़ी कविताएँ, गद्य काव्य और कथा काव्य का मिश्रण होने से विविधता आती है।

कवि नीरज जी के 'अंतर्ध्वनि' अथवा 'लहर पुकारे' के बारे में विचार कुछ और ही जान पड़ते हैं, क्योंकी प्रथम रचना 'संघर्ष' और द्वितीय रचना 'अंतर्ध्वनि' में बहुत कुछ विभिन्नता देखने को मिलती है। यह बात सामान्य नहीं है। अगर कोई भी रचनाकार अपनी दो रचनाओं को प्रकाशित करता है, तो दोनों में साम्य रहता ही है। शायद नीरज जी ने अपने ऊपर रहनेवाला बच्चनजी का प्रभाव मिटाने का यत्न किया है। क्योंकि इस काव्य कृति की प्रस्तावना में उन्होंने बच्चनजी के बारे में उल्लेख भी करना उचित नहीं समझा। और अपने इस प्रयत्न में वे सफल भी रहे हैं। उनकी रचना में विषय के साथ ही अन्य बातों में भी विभिन्नता दिखाई दे रही है। नीरज जी ने इस बात को भी सच साबित किया है कि, अगर मेहनत और लगन के साथ कोई कार्य किया जाए, तो सफलता अवश्य मिलती है। कवि ने अपनी कविताओं में जीवन का उपेक्षित अंग, पीड़ित जनता का असहाय रूप, उपेक्षितों की करूण कहानी और अल्हड मन का चित्रण किया है।

आत्मविश्वास के बिना कोई भी कार्य आसान नहीं है, यह जानकर कवि ने लोगों को संकटों से लडने का और हिम्मत बनाये रखने का सुझाव दिया है। साथ ही, इस काव्यकृति के बारे में कवि के उल्लेखनीय विचार रहे है।

2.1.3 विभावरी अथवा बादर बरस गयो :

पहली दो रचनाओं के प्रकाशन से नीरज जी का मन तृप्त हुआ होगा और लोगों ने उन्हें पसंद करने से मदहोशी का इक नशा सा छा गया होगा, इसी कारण तिसरी रचना 'विभावरी' अथवा 'बादर बरस गयो' को प्रकाशित करने के लिए उन्हें पाँच वर्ष का समय लगा। इस 'विभावरी' को दोबारा प्रकाशित करना ही था। क्योंकि हर रचना को दोबारा प्रकाशित करने की कवि को आदत सी हो गई थी, या फिर हर रचना में कुछ बात थी, जो उसे दोबारा प्रकाशित करने के लिए कवि मजबूर हो जाने थे। वैसे भी 'बादर बरस गयो' यह नाम सन 1958 के समय में कुछ खास ही रहा होगा, वरना 1951 की 'विभावरी' रचना अपना अस्तित्व कायम रखने में कामयाब हो जाती। हर वक्त कुछ हट के करना नीरज जी की आदत बन गयी थी, अतः इस रचना को भूमिका के साये से दूर रहना पड़ा। या फिर नीरज जी की लोकप्रियता के निचे भूमिका दबकर रह गयी थी, जिसे उन्होंने आजाद किया।

प्रस्तुत रचना 'विभावरी' अथवा 'बादर बरस गयो' में कुल बावन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है –

1 नहीं मिला,
2 नींद भी मेरे नयन की,
3 दिया जलता रहा,
4 पिया दूर है न पास है,
5 मुहूरत निकल जाएगा,
6 बहार आयी,
7 कितने दिन चलेगा ?
8 मरण - त्यौहार,
9 कफन है आसमान,
10 क्यों मन आज उदास है,
11 आ गई थी याद तब,
12 सूनी - सूनी साँस की सितार पर,
13 व्यंग यह निष्ठुर समय का,
14 बन्द कूलों में,
15 गीत,
16 प्यार सिखाना व्यर्थ है,
17 खेल यह जीवन - मरण का,
18 रूके न जब तक साँस,
19 मुस्कराकर चल मुसाफिर,
20 मेरा इतिहास नही है,
21 मैं तूफानों में,
22 मैं अकंपित दीप,
23 यह संभव नही है,
24 नसन तुम्हारे,
25 ऐसे भी क्षण आते,
26 इतना तो बतलाते,
27 तेरी भारी हार,
28 स्वीकार,
29 पराजय भी फिर जय है,
30 चाँदी का यह देश,
31 धर्म है,
32 फूल हो जो,
33 कल का करो न ध्यान,
34 तुम्हें मेरी कसम है,
35 गीत

36 आज मेरी गोद में,
37 अभी न जाओ प्राण !
38 मगर निष्ठुर न तुम रूके,
39 इस पार कभी उस पार कभी,
40 नारी,
41 यदि मैं होता घन सावन का,
42 अंतिम बूंद,
43 अभिमान अभी बाकी है,
44 क्या यही है प्रेम का प्रतिकार ?
45 भूल जाना,
46 बन्द करो मधु की,
47 निभना ही कठिन है,
48 तब याद किसी की,
49 प्यार नही मिलता है,
50 मैं तुम्हें अपना
51 अब न आऊँगा,
52 अब तुम रुठो !

'विभावरी' कविता संग्रह को देखने के पश्चात यह अनुमान लगाया जा सकता है कि, जिंदगी को जिने का कवि का अपना एक अलग ही नजरिया है। जीवन में आनेवाले उतार - चढाव, सुख - दुःख और रिश्ते - नाते जीवन की डगर को बहुत ही रंगीन बना देते है। जिसके कारण काव्य के विषय में विविध पहलुओं का चित्रण दिखाई देता है। मगर देखनेवालों का काम ही है बखेड़ा खडा करना। और अपने इस स्वभाव के कारण दिमागवालों की दो श्रेणीयाँ दो प्रकार के मतप्रवाह निर्माण करती है। जिसमें से पहला प्रवाह कवि की इस रचना को प्रौढ कृति मानता है। और उनके विचार हैं - " बादर बरस गयो का कवि जीवन के दर्द से परिचित है। नीरज के काव्य में जो एक अजीब दर्द रहता है। उसका स्पष्ट संकेत यहीं से मिलना प्रारम्भ होता है। जीवन के रहस्य से परिचित कवि के गीतों में अजीब टीस, एक मर्मस्पर्शी विकलता जन्म ले लेती है। यहां कवि का अहं इतना प्रबुद्ध है कि प्रेम में भी आत्मसम्मान की उसे चिन्ता है। उसका आहत अभिमान किसी के सम्मुख नमन करना नहीं जानता...। साथ ही आशा का दीपक भी उसके पथ को आलोकित करता रहता है जिसके प्रकाश में वह जीवन की हर मुश्किल को पारकर मंजिल तक पहुँच जाने का उत्साह और आत्मविश्वास जुटा सका है। संघर्षों से लड़ने की शक्ति उसके आशावाद को जन्म देती है। उस तरह बादर बरस गयो का कवि एक साथ ही कई विकासों की सूचना देता है। "[6]

तो दूसरा मतप्रवाह कवि के विचारों को समझने से परे है, क्योंकि उन्होंने इस रचना के प्रति अपना मत अत्यंत कटु रूप में प्रकट किया है। इस मतप्रवाह का नेतृत्व करते हुए श्री. ललितमोहन अवस्थी ने अपनी रचना 'आज के कवि' में कवि नीरज जी के बारे में इसप्रकार से मंतव्य दिया है - " इस कवि में पर्याप्त साहस और शक्ति का अभाव है, इसलिये जीवन की निराशा, परवशता और विफलता उसे

मृत्यु का विश्वासी बना देती है। और फिर वह मृत्यु को ही जीवन मानकर उसी का राग गाने लगता है। कब्र कफन मरघट में ही उसकी सारी कविता सिमट जाती है। विभावरी की अधिकतर कविताओं में इन्ही शब्दों से संबंधित भाव पढ़ने को मिलते हैं। इस प्रकार यह कवि सम्पूर्ण समाज में मृत्यु का प्रचारक बन जाता है। "[7]

प्रस्तुत रचना में कवि ने दो प्रकार के विषय प्रकट करने का कार्य किया है। कुछ कविताओं में मृत्यु का चित्रण किया है और कुछ कविताओं में वासना का। शायद अपने जीवन की त्रासदी को व्यक्त करने का उनके पास और कोई माध्यम न बचा हो।

श्री. ललितमोहन अवस्थी का मानना है कि, कवि नीरज जी के काव्य में वासना अथवा यौन भावनाओं का चित्रण उच्चशिखर तक पहुँच चुका है और जिस प्रकार साँस लिए बिना जीना मुश्किल है, ठिक उसी प्रकार यौन के चित्रण के सिवा नीरज का काव्य मुश्किल है। और वासना को जागृत करने में रीतिकाल भी नीरज जी के पीछे रहा है। मगा अवस्थीजी के आवाहन में अकेलापन नजर आता है क्योंकि उनके विचारपुष्प चुननेवाला कोई दिखाई नही देता। सभी का मानना है कि, उनका मत दुषित या कलुशित मनोवृत्ति का प्रतिक है। दुनिया के किसी कोने में रेगिस्तान है, इसका मतलब यह नहीं की सारी दूनिया केवल रेगिस्तान ही है। बल्कि दूनिया में पानी, पेड़ चौधे, हरियाली, पर्वत और बहुत कुछ बाकी है। ठिक उसी प्रकार नीरज जी के काव्य का एक कोना यौन का रहा होगा तो उनपर सारे काव्य में यौन चित्रण का आरोप लगाना तर्कसंगत न रहेगा।

कवि में सकारात्मक दृष्टिकोन का निर्माण होना और उनमें आत्मविश्वास को पहचानने की ताकत आना ही 'विभावरी' अथवा 'बादर बरस गयो' की सार्थकता मानी जाएगी। अपने निश्चय पर अटल रहकर ध्येय के प्रति आसक्ती रखते हुए प्रयास करते रहना ही कवि की नियति बन चुकी है।

2.1.4 गीत भी अगीत भी, फिर दीप जलेगा एवं तुम्हारे लिए :-

समय के साथ नीरज जी की काव्य प्रतिभा भी बढ़ती गयी। कविता लिखने के साथ ही उन्होंने गीतों की रचना करना शुरू किया। और नीरज जी के गीत हर आदमी के लबों पर खिलने लगे। उनकी अंतिम रचनाओं में इन तीन काव्य - संग्रहों का नाम लिया जाता है। जिसमें से 'गीत भी अगीत भी' में प्रतिनिधि काव्य को इकट्ठा किया गया है और इसका प्रकाशन 1963 में हुआ। नीरज जी के गीतों और कविताओं को संकलित करनेवाला काव्यसंग्रह 'फिर दीप जलेगा' सन 1970 में प्रकाशित हुआ और 'तुम्हारे लिए' को प्रकाशित होने के लिए सन 1971 की राह देखनी पड़ी। इसप्रकार इन तीन काव्य - कृतियों का सफर रहा है।

कवि नीरज जी के 'गीत भी अगीत भी' काव्य - संग्रह में कुल मिलाकर इकतालिस कविताओंका संकलन किया गया है।

1 गीत - विश्व चाहे या न चाहे,
2 सारा जग बंजारा होता,
3 मैं पीड़ा का राजकुँवर हूँ !

4 सारा जग मधुवन लगता है,
5 उसकी याद हमें आती है,
6 खिड़की बन्द कर दो,
7 अब सहा जाता नहीं,
8 तुम ही नहीं मिले जीवन में,
9 बिन धागे की सुई जिन्दगी,
10 जीवन नहीं मरा करता है,
11 सारा बाग नजर आता है,
12 रीती गागर का क्या होगा,
13 माँ ! जल भरन न जाऊँ,
14 माँ ! मत ऐसे हेर,
15 माँ ! अब गोद सुला ले,
16 माँ ! मत हो नाराज,
17 मात्र परछाईं हूँ,
18 खिड़की खुली,
19 मोती हूँ मैं,
20 द्वैताद्वैत
21 पायदान,
22 हरिण और मृगजल,
23 धनी और निर्धन,
24 नया हिसाब,
25 एक विचार,
26 अंजली,
27 गीता साधो। हम चौसर की गोटी,
28 गीत साधो जीवन दुःख की घाटी,
29 साधो ! दुनिया दरसन मेला,
30 पतझर घर तक आ पहुँचा है,
31 सम्पूर्ण भरत की आत्मा एक है,
32 सैनिकों का प्रणय गीत,
33 फूल, बाग, और सुन्दरता,
34 गीत - धरती का जोबन जागे,
35 बेशरम समय शरमा ही जाएगा,
36 मुक्तक,
37 आदमी का लहू,
38 प्यार बिना क्वाँरी हर बहुरिया,
39 गीत - सेज पर साधें बिछा लो,
40 ऐसी रात नहीं आती है,
41 हमारो रंग केसरिया !

'विभावरी' या 'बादर बरस गयो' काव्य कृति के बाद प्राणगीत, दर्द दिया है, दो गीत, आसावरी, नीरज की पाती, मुक्तकी, लिख लिख भेजत पाती, नीरज के लोकप्रिय गीत इन काव्य कृतियों का प्रकाशन हुआ। मगर 'गीत भी अगीत भी' के पहले और 'विभावरी' के बाद प्रकाशित काव्य कृतियों का दूसरा संस्करण नहीं निकाला गया। इस कारण 'गीत भी अगीत भी' इस रचना की जानकारी चौथे स्थान पर देना मुझे उचित लगता है। कवि नीरज जी की उपअंतिम काव्य कृतियों के रूप में गीत भी अगीत भी, फिर दीप जलेगा और तुम्हारे लिए रचनाओं को जाना जाता है।

नीरज जी ने जब से प्रेम कविता लिखना आरंभ किया है, प्रेमी युगुल से लेकर हर नरम दिलवाला उनका चहेता बना हुआ है। प्रेम कविता में मिलन और विरह दोनों स्थितियों का चित्रण करना उनकी खासियत रही है। मिलन पक्ष के चित्रण में सुखी जीवन की अनुभूति और प्रेम प्राप्ति की कल्पना दिल को सुकून पहुँचाती है। तो विरह वर्णन में होनेवाली पीड़ा, टिस दिल को घायल किये बिना नही रहती। नीरज जी को हालात ने घायल किया मगर हमें घायल करने के लिए उनके अल्फाज ही काफी हैं।

"जीवन क्या है एक बात जो
इतनी सिर्फ समझ में आए -
कहे इसे वह भी पछताए
सुने इसे वह भी पछताए
मगर यही अनबूझ पहेली शिशु सी सरल सहज बन जाती
अगर तर्क को छोड़ भावना के सँग किया गुज़ारा होता।" [8]

कवि नीरज जी 'सारा जग बंजारा होता' कविता में जीवन का चित्रण करते हुए बताते है कि, जीवन को तर्क के साथ समझना चाहोगे तो कुछ न जान पाओगे। अगर भावनाओं को समझोगे तो जीवन तुम्हारी समझ में आ जाएगा।

"मीलों जहाँन पता खुशी का
मैं उस आँगन का इकलौता,
तुम उस घर की कली जहाँ नित
होंठ करें गीतों का न्योता,
मेरी उमर अमावस काली और तुम्हारी पूनम गोरी
मिल भी गई राशि अपनी तो बोलो लगत कहाँ पर होगा ?" [9]

'मैं पीड़ा का राजकुँवर हूँ' कविता में कवि ने अमीर - गरीब परिवारों का अंतर स्पष्ट करते हुए सुख - दुःख का चित्रण किया है।

"रोम - रोम में खिले चमेली
साँस - साँस में महके बेला,
पोर - पोर से झरे मालती
अँग - अँग जुड़े जुही का मेला

पग - पग लहरे मानसरोबर, डगर - डगर छाया कदम्ब की
तुम जब से मिल गए उमर का खँडहर राजभवन लगता है।" [10]

'सारा जग मधुबन लगता है' कविता में कवि ने प्रिय व्यक्ति के मिलने के बाद जीवन में आये परिवर्तन को चित्रित किया है। और जीवन को देखने का नज़रिया कैसे बदल जाता है, यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

"बालापन की प्रीति भूलाकर
वे तो हुए महल के वासी,
जपते उनका नाम यहाँ हम
यौवन में बनकर सन्यासी
सावन बिना मल्हार बीतता, फागुन बिना फाग कट जाता,
जो भी रितु आती है बृज में वह बस आँसू ही लाती है।" [11]

'उनकी याद हमें आती है' कविता में कवि ने विरह वर्णन का चित्रण किया है। प्रिय व्यक्ति के दूर जानेपर मन की व्यथा, कहीं मन का न लगना, निराशा आदि का चित्रण किया गया है।

इसप्रकार से प्रस्तुत रचना में विषय की विविधता और कवि की सफलता देखने में आ जाती है।

2.1.5 नीरज के लोकप्रिय गीत :-

एक नाम से अगर दो रचनाओं का प्रकाशन किया जाएगा, तो संदिग्ध अवस्था का निर्माण होना सहज है। यहि बात नीरज जी के बारे में कही जाएगी। अपनी सुंदर कविताओं को एकत्रित करके उन्होंने 'नीरज के लोकप्रिय गीत' नाम से एक रचना को जन्म दिया। सन 1967 की यह महत्वपूर्ण रचना मानी गई, जिसे प्रकाशित करने का सुअवसर 'हिन्द पाकेट बुक्स' को मिला। रहस्यमय तरिके से अपनी बात कहने का ढंग, आकर्षक शब्द शैली का प्रयोग और हर अनुभव को कवित्वमय ढंग से या दिल को छुनेवाले अल्फाजो में कहना यह नीरज जी की विशेषताएँ हैं। 'नीरज के लोकप्रिय गीत' रचना में संकलित कविताएँ इस प्रकार से हैं —

1 सुख के साथी,
2 कोई मोती गूंथ सुहागिन,
3 आज जी भर देख लो तुम चाँद को,
4 विरह रो रहा है मिलन गा रहा है,
5 कितने दिन चलेगा,
6 कफन है आसमान,
7 क्यों मन आज उदास है,
8 चाँदी का यह देश,

9 कल का करो न ध्यान,
10 तुम्हें मेरी कसम है
11 अभी न जाओ प्राण,
12 आज मेरी गोद में,
13 वसंत की रात,
14 मगर निठुर न तुम रूके,
15 इस पार कभी, उस पार कभी,
16 फूल हो जो,
17 यदि मैं होता घन सावन का,
18 निभाना ही कठिन है,
19 तब याद किसी की आती है,
20 प्यार नहीं मिलता है,
21 मै तुम्हें अपना बनाना चाहता हूँ,
22 अब तुम रूठो,
23 ओ प्यासे अधरों वाली,
24 ओ प्यासे !
25 बुलबुल और गुलाब,
26 यदि वाणी भी मिल जाए दर्पण को,
27 स्वर्गदूत से,
28 जिस दिन तेरी याद न आई,
29 जब न तुम ही मिले,
30 प्रेमपथ न हो सूना,
31 दिया जलता रहा,
32 मैं तूफानों में,
33 हजारों सॉझी मेरे प्यार में,
34 सूनी - सूनी सांस की सितार पर !

मगर नीरज जी ने यही नाम दूसरी रचना के लिए क्यों चूना यह मेरी समझ से बाहर है। क्योंकि दूसरी रचना पहली रचना में फिल्मी गीत। मै मानता हूँ कि, इन गीतों में एक अजब सी कशिश देखने को मिलती है। तो फिर इस कशिश को दर्शाने वाले अल्फाज नाम के साथ क्यों नहीं जुड पाये ?

शायद नीरज जी को यह समानता दिखानी होगी कि, दोनों में कविताएँ हों या फिल्मी गीत, मगर केवल संकलन ही है। जो अन्य रचनाओं में पहले प्रकाशित हुआ है। तो फिर दोनों के नाम में परिवर्तन न लाया, तो इसमें कौन सी बड़ी बात है ?

हर बात को अलग नजरिये से देखना यह नीरज जी की खासियत रही है। इसी कारण 'नीरज के लोकप्रिय गीत' नाम को दोबारा सम्मान प्रदान करते हुए, दूसरी रचना के शीर्षक में स्थान दिया गया। और यह रचना प्रकाशित हुई सन 1975 में तथा इसे प्रकाशित करने का सौभाग्य मिला 'पंजाबी पुस्तक भंडार, नई दिल्ली' को।

इस रचना के पहले प्रस्तावना का होना यह संकेत देता है कि, इस रचना में कुछ खास है। जिसे दर्शाने के लिए प्रस्तावना का निर्माण करना पड़ा। प्रस्तावना के अंतर्गत कवि ने गीत के बारे में बताया है। गीत क्या है ? गीतों के स्वरूप का विश्लेषण और अन्य महत्वपूर्ण बातों का यहाँपर स्पष्ट करने का प्रयास किया है। ताकि पाठक पहले गीत का मतलब समझ ले। इससे गीतों का आस्वाद लेने में उन्हें मदद मिल सकती है। क्योंकि किसी भी बात को जाने - पहचाने बगैर उसका अनुभव करना लगभग असंभव बात है।

इस रचना में कवि नीरज जी ने अपने इक्यानवे फिल्मी गीतों को बटोरा है। जिन्हें पढ़ने से कवि की प्रतिभा का पता चलता है। गीतों की सूचि इसप्रकार है –

1 तन मन तेरे रंग रंगूंगी, छाया बन कर संग चलूंगी,
2 कैसी महफिल है यह, कैसा मेला लगा है यह,
3 ओ आ जा, आ जा ना, प्यार पुकारे श्रृंगार पुकारे,
4 सोने देती है न यह रात, कोई बात करो,
5 तोसे नजरिया लड़ाई, जवानी हाय राम, यूं ही गंवाई,
6 आज की रात तो मुझसे न शरमाओ, तुम्हें मेरी कसम है,
7 आज की रात बड़ी शोख बड़ी नटखट है,
8 देखती ही रहो आज दर्पण न तुम, प्यार का ये मुहूरत निकल जाएगा,
9 अपने होठों की वंशी बना ले मुझे, मेरी सांसों में तेरी साँस घुल जाए,
10 झूम के गा यूं आज मेरे दिल, रात गुजरे सुबह न आये,
11 मेरा मन तेरा प्सासा, पूरी कब होगी आशा,
12 मन मेरा तेरा योगी,
13 ओ मेरी शर्मीली,
14 मेरा साजन फूल कमल का, कली मैं रात रानी की,
15 मेरे सौंयों गुलबियों के फूल, हमारो रंग केसरिया,
16 थिरकें पग जिया गाये, गाये जाने न हुआ मुझे क्या,
17 रेशमी उजाला है, मखमली अँधेरा, आज की रात ऐसा कुछ करो,
18 आज मदहोश हुआ जाये रे मेरा मन,
19 मिल गये, मिल गये आज ओ मेरे सनम,
20 फुर्र उड़ चला हवाओं के संग - संग दिल मेरा,
21 मेरा अंतर एक मंदिर है,
22 हे मैंने कसम ली,
23 जीवन की बगिया महकेगी,
24 चूड़ी नहीं मेरा दिल है,
25 तुम नाचो रस बरसे,
26 ओ दूंगी तेनू रेशमी रूमाल,
27 ओ कौन कली हैतू,
28 पानी में जले मेरा गोरा बदन,

29 मस्ती और जवानी हो, उमर बड़ी मस्तानी हो,
30 साथ में प्यारा साथी है, रात भी यह मदमाती है,
31 है लो आप यहाँ आये किसलिए
32 जहर भी खया, कुएँ में भी कूदा,
33 नशा शराब में होता तो नाचती बोतल,
34 बतलाओ कहाँ हो तुम,
35 जइयो न यमुना पे अकेली तुम राधा,
36 सूनी - सूनी साँस के सितार पर भीगे भीगे आँसुओं के तार पर,
37 लिखे जो खत तुझे वो तेरी याद में,
38 शोखियों में घोला जाए फूलों का शबाब,
39 मेघा छाए आधी रात,
40 खुशी जिसने खोजी, वो धन ले के लौटा,
41 वो हम न थे, वो तुम न थे,
42 जब से लगन लगाई रे,
43 रे मन सुर में गा,
44 कैसा है मेरे दिल तू खिलाड़ी,
45 दिल आज शायर है, गम आज नगमा है,
46 उमरिया बिन खेवक की नैया,
47 लकड़ी जली, कोयला बनी,
48 रंगीला रे, तेरे रंग में,
49 देखिये क्या अजीब हाल है,
50 जैसे राधा ने माला जपी श्याम की,
51 कैसे कहें हम प्यार ने हमको,
52 खिलते हैं गुल यहाँ खिल के बिखरने को,
53 बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ,
54 कहता है जोकर सारा जमाना,
55 जन्नत है देखनी तो,
56 पैसे की पहचान यहाँ, इन्सान की कीमत कोई नहीं,
57 सबसे बड़ा नादान वही है,
58 ऐ भाई जरा देख के चलो,
59 टिक, टिक... चलती जाए घड़ी,
60 हाय जमाने धत तेरे की,
61 देख तमाशा,
62 फूलों की महक,
63 माँ ही गंगा, माँ ही यमुना,
64 हम छुपे रूस्तम हैं,
65 नदिया की भरी भरी गोद,
66 चल रे मुसाफिर जब तक सांस चले,

67 गम पे धूल डालो,
68 फूलों के रंग से दिल की कलम से,
69 कल की न करो बात,
70 प्रेम के पुजारी,
71 ताकत वतन की हम से,
72 मायूस न हो ऐ मेरे वतन,
73 तू कहे महाराष्ट्र तेरा वो कहें गुजरात मेरा,
74 सुख के सब साथी दुःख में न कोई,
75 धीरे से जाना खटियन में,
76 हरि ओइम्, हरि ओइम्,
77 काल का पहिया घूमे भैया,
78 मै लाल लाल मुचकूँ,
79 आज तो तेरे ही यहाँ आने का मौसम है,
80 तुम कितनी खूबसूरत हो,
81 मेरी नजरों ने कैसे कैसे काम कर दिए,
82 जरा इधर, जरा इधर,
83 ऐ बाग की कलियों शर्म करों,
84 हम लोग है ऐसे दीवाने,
85 प्यार पे कोई बस तो नही है,
86 आ जा प्यारे,
87 अदा आई वफा आई,
88 ना मैं हूँ मैं, ना तू है तू,
89 सच्चा प्यार झुक नहीं सकता,
90 बाबुल कौन घड़ी ये आई,
91 स्वप्न झरे फूल से मीत चुभे शूल से !

कुछ रचनाओं को फिल्म में लेते समय, कुछ परिवर्तन करके सरल एवं सहज बनाया गया। सौंदर्य की दृष्टि, प्रेम भावना और मानववादी विचारधारा यह नीरज जी के गीतों की विशेषता मानी जाएगी। इनकी बदौलत नीरज सार्थक रचनाकार माने जाते हैं।

2.1.6 कारवाँ गुजर गया :-

इस काव्य कृति का प्रकाशन कवि नीरज जी ने सन 1991 में किया। इसे प्रकाशित करने का सुअवसर 'हिन्द पॉकेट बुक्स' को मिला। इस रचना में चालिस कविताएँ, एक ग़ज़ल और सत्रह गीतिकाएँ हैं। यह रचना एक सौ चालिस पन्नों की है। 'कारवाँ गुजर गया' के मुखपृष्ठ पर जो शेर है, वह नीरज जी की दास्तान कहने में कामयाब हुआ है। ग़ज़लों की भाषा दिल को छूनेवाली है और कविताओं में सारगर्भिता नजर आती है। 'मेला एक मशाल का' यह प्रस्तुत काव्य कृति में सबसे

बडी कविता है, जो कुल मिलाकर आठ पृष्ठों की है।

डॉ. मधु खराटेजी के नीरज जी के बारे में विचार हैं - " ईश्वरीय प्रेम को प्राप्त करने की एक ही शर्त है कि 'अहं' को विसर्जित किया जाए। मोह - माया के बंधन को तोडकर कोई भी साधक परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है। ईश्वर - प्रेम का जिसने घूँट पिया है, जो ईश्वर के प्रेम में दीवाना - मस्ताना बन गया है उसे मंजिल मिल जाती है। भले ही वह सामान्य जन हो। इसी यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति नीरज जी के काव्य में होती है। " [12]

"वो न ज्ञानी, न वो ध्यानी, न बिरहमन, न वो शेख़
वो कोई और थे जो तेरे मकां तक पहुँचे।
सदियों - सदियों न बहाँ पहुँचेगी दुनिया सारी
एक ही घुँट में मस्ताने जहाँ तक पहुँचे।" [13]

अपनी ग़ज़लों में विविध विषयों का चयन, यह नीरज जी की खासियत रही है। वे कहते हैं कि, वो ज्ञानी नहीं थे, ध्यानी नहीं थे, न तुम्हारे पुजारी थे जो तुम्हारे पास पहुँच हैं। सदियों से जहाँ पहुँचना सारी दुनिया को न मुमकिन हुआ, वहाँपर एक ही घूँट के साथ मस्ताने पहुँच जाते हैं।

"ये दुनिया एक सराय की तरह है, जहाँ कुछ पल के लिए मुसाफिर रूकते हैं और चले जाते हैं। लेकिन अज्ञानता के कारण हम इस दुनिया को ही अपना घर समझते हैं। जैसे - जैसे ज्ञान प्राप्त होने लगता है तब हमारा यह भ्रम टूट जाता है। अज्ञानतावश हम यह भूल जाते हैं कि, हम भी इस दुनिया में मुसाफिर हैं और हम यहाँ-वहाँ दिशाहीन भटकते रहते हैं। इन भावों की भी अभिव्यक्ति होती है।" [14] यह विचार नीरज जी की निम्न ग़ज़ल के बारे में हैं -

"सराय थी जो उसे मैंने अपना घर समझा
यही हसीन भरम मेरा कैदखाना था।
हरेक शख्स मुसाफिर था इस जगह लेकिन
पता किसी को नहीं था कहाँ पे जाना था।" [15]

'कारवाँ गुजर गया' में निम्न कविताएँ और ग़ज़ले संकलित की हैं -

1 इसीलिए तो,
2 मेरा श्याम सकारे मेरी हुण्डी,
3 हर मौसम सुख का मौसम है,
4 ओ हर सुबह जगाने वाले,
5 हम पत्ते तूफान के,
6 जिन्दगी दुल्हन है,
7 मेरा मन दिवला,
8 जड़े घटाओं के,
9 खिड़की बन्द कर दो,

...KAR LIBRARY ... KOLHAPUR

10 पालकी बहार की,
11 सारा जग मधुबन लगता है,
12 मैं पीड़ा का राजकुँवर हूँ,
13 बिन धागे की सुई जिन्दगी,
14 सारा जग बंजारा होता,
15 माँ मत हो नाराज,
16 रीती गागर का क्या होगा,
17 साधो ! हम चौसर की गोटी,
18 अपनी बानी प्रेम की बानी,
19 जग तेरा बलिहारी,
20 कितने दिन और,
21 डाल अमलतास की,
22 नदिया पै बोले एक पपिहा,
23 अकेले मन लागे ना,
24 बिन खेवक की नैया,
25 जो भी काम पड़े,
26 सोनतरी अभी कहाँ आई,
27 मैंने वह अँगूठी उतार दी,
28 जब तुम चले गए,
29 रचना होगी,
30 लहरों का खेल,
31 चल रे, चल रे बटोही,
32 कारवाँ गुजर गया,
33 आदम का लहू,
34 बस एक कदम,
35 मेरे हिमालय के पासबानो,
36 पानी दो,
37 हम तुम्हें मरने न देंगे,
38 रेशम की चादर,
39 मेला एक मशाल का,
40 छः मुक्तक,
41 एक ग़ज़ल,
42 गीतीका खण्ड !

" अर्थ-वेदी प' भावनाओं को
आँसुओं से विवाह करना पड़ा।" [16]

इन पंक्तियों का अर्थ बताते हुए डॉ. मधु खराटेजी कहते हैं - " जीवन में प्रेम, सुख, अपनापन जब प्राप्त नहीं होता है तो मनुष्य निराश हो जाता है। वर्तमान युग में दर्द, वेदना, मुसीबतें, तकलीफें आदि के काँटे इस तरह मानव के जीवन - पथ पर बिछे हुए हैं कि, मनुष्य को अपना जीना बेकार लगने लगता है। ऐसी स्थिती में उसका हताश हो जाना लाजमी है। अपनी इन्हीं विषादपूर्ण भावनाओं को कवि नीरज जी ने अभिव्यक्त किया है। " [17]

"हर किसी शख्स की किस्मत का यही है किस्सा,
आए राजा की तरह, जाए वो निर्धन की तरह।" [18]

इसका विश्लेषण करते हुए डॉ. मधु खराटेजी बताते हैं - " संसार की नश्वरता तथा नियतिवादी दर्शन के तत्व भी साठोत्तरी हिंदी ग़ज़लों में यत्र - तत्र दिखाई देते हैं। जीवन दुःख में और सुख का चक्र निरंतर चलना रहता है। जीवन में महत्वपूर्ण बात यह है कि मनुष्य जब इस नश्वर संसार से विदा लेता है तब वह खाली हाँथ ही यहाँ से जाता है। इस बात को नीरज जी ने मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है। " [19]

इसप्रकार 'कारवाँ गुजर गया' काव्य कृति के विविध पहलु देखने में आ जाते हैं। कवि नीरज जी की प्रतिभा का यह सबसे बेहतर प्रदर्शन माना जाएगा।

2.1.7 प्राणगीत :-

आदत को छूटने में काफी समय लगता है और आदत बदलने में उससे भी अधिक। रचनाएँ तो बनती रहेंगी जब तक कल्पनाओं का साथ है और अल्फाज में कुछ बात है। मगर दिल जितने के लिए भावणाओं का होना आवश्यक है। कवि नीरज जी ने अपनी चौथी काव्य कृति बनाते समय बदलाव को लाना जरूरी समझा। अन्य रचनाओं की भाँति यह रचना ऊपरी सजावट न बनकर आत्मा तक अपना प्रभाव दिखाये, इसलिए इसका नाम रखा गया 'प्राणगीत'। 'प्राणगीत' वह गीत है, जो जीवन भर हमारे साथ रहेगा। जिस दिन वह न रहेगा, हमारा भी दूनिया में अस्तित्व न रहेगा। इस रचना का प्रकाशन सन 1954 में किया गया। मगर परिवर्तन सृष्टि का नियम है, यह बात अपने दिमाग में उतारकर। अन्य काव्य कृतियों की भाँति इसका दोबारा प्रकाशन करवाते समय नाम के साथ कुछ भी खिलवाड न करते हुए, वही नाम अंत तक रखने का फैसला किया गया और इसके साथ नौ पृष्ठों का दृष्टिकोण भी जोड दिया गया। यही इस काव्य कृति की विशेषता मानी गई।

कवि नीरज जी के इस दृष्टिकोण में काव्य संबंधि विचार हैं - " मेरे कुछ मित्रों का आग्रह है कि मैं अपनी कविता की व्याख्या करूँ। जब मुझसे आग्रह किया गया तब मैंने स्वीकार कर लिया, पर अब जब व्याख्या करने बैठा हूँ तो पाता हूँ कि असमर्थ हूँ। मेरे विचार से कविता की और विशेषरूप से गीत की व्याख्या नहीं हो सकती। वह क्षण जो कंठ को स्वर और अधरों को वाणी दे जाता है, कुछ ऐसा अचिंत्य, अनुपम और अनमोल है कि पकड़ में नहीं आता। उसे पकडने के लिए तो स्वयं खो जाना पड़ता है और जहाँ खोकर पाना हो वहाँ व्याख्या कैसे की जाय ?...

इसीलिये मैं कहता हूँ कि काव्य की व्याख्या नहीं की जा सकती। पर हाँ, जिस प्रकार कुसुम के सुवास की व्याख्या न होकर उसकी पँखुरियों के रूप - रंग (बाह्यावरण) के विषय में कुछ बताया जा सकता है, उसी प्रकार काव्य के भाव की मीमांसा न सम्भव होकर भी उसके साधनों और उसके कारणों के विषय में कुछ संकेत दिये जा सकते हैं।

जीवन के सत्ताइस पृष्ठ पढ़ने के बाद मेरी अनुभूती अब तक केवल तीन सत्य प्राप्त कर सकी है - सौन्दर्य, प्रेम और मृत्यू। इसका अर्थ मेरी कविता में क्रमशः चिति (सौन्दर्य), गति (प्रेम) और यति (मृत्यु) है। अपने पाठकों और आलोचकों की सुविधा के लिए मैं प्रत्येक की अलग - अलग व्याख्या करूँगा। ''[20]

कवि नीरज जी के काव्य में विरह वर्णन काफी ताकदवर रहता है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए निचे 'मुझे न करना याद, तुम्हारा आँगन गीला हो जायेगा' कविता की कुछ पंक्तियाँ दे रहे हैं -

"याद सुखद उसकी बस जग में होकर भी दूर, पास हो,
किन्तु व्यर्थ उसकी सुधि करना जिसके मिलने की न आस हो,
मैं अब इतनी दूर कि जितनी सागर से मरूथल की दूरी,
और अभी क्या ठीक कहॉ ले जाये जीवन की मजबूरी,
गीत - हंस के हाथ इसलिए मुझको मत भेजना संदेशा,
मुझको मिटता देख, तुम्हारा स्वर दर्दीला हो जायेगा
मुझे न करना याद, तुम्हारा आँगन गीला हो जायेगा।''[21]

इस कविता के माध्यम से नीरज जी ने प्रेमी की व्यथा को व्यक्त किया है। अपने प्रिय व्यक्ति की याद उसे सुखद लगती है और वह दूर होते हूए भी पास लगती है। न मिलने वाली व्यक्ति का मोह व्यर्थ है यह जानकर वह अपने प्रिय व्यक्ति को समझाता है कि सागर और मरूस्थल कभी मिल नहीं सकते, उसी प्रकार हमारा मिलना असंभव है। मेरी मजबूरी मुझे कहाँ ले जायेगी, यह बताना भी मुश्किल है। अतः तुम मुझसे मिलने की कोशिश मत करना। क्योंकि मुझे तड़पते हुए तुम देख नही पाओगी। और तुम्हें दर्द महसूस होगा। इसलिए तुम मुझे भूल जाओ। अगर तुम मुझे याद करोगी, तो तुम्हारी आँखे आँसुओं से नम हो जायेंगी। इसप्रकार कवि ने विरह अवस्था का सजीव चित्रण किया है।

कवि ने अपनी 'प्राणगीत' रचना में कुल मिलाकर पचास कविताओं को सम्मिलित किया है -

1 क्या करेगा प्यार वह,
2 गीत
3 कोई नहीं पराया, मेरा घर,
4 प्रेम पथ हो न सूना
5 प्रेम को न दान दो,
6 तुम ड़रो न, प्यार करो,
7 दुश्मन को अपना ह्रदय जरा देकर देखो,

8 दीप नहीं, दीप का,
9 जलाओ दिए पर,
10 मूर्ख पुजारी है वह जो कहता,
11 खोजने तुमको गया,
12 जब न तुम ही मिले,
13 मुझे न करना याद, तुमहारा,
14 जगत् सत्यं ब्रहम मिथ्या,
15 जब सूना सूना,
16 तुम्हारे बिना आरती,
17 एक पाँव चल रहा,
18 कहते कहते थके,
19 इस तरह तय हुआ साँस का यह सफर,
20 यूँ ही यूँ ही,
21 आदमी है मौत,
22 यह प्रवाह है,
23 आदमी को प्यार दो,
24 इस पार नहीं, उस पार नहीं,
25 कौन तुम हो,
26 एक बार यदि अपने मंदिर,
27 भूखी धरती अब,
28 सृष्टि हो जाये,
29 30 जनवरी - एक आदेश,
30 मन आजाद नहीं है,
31 क्या है यह,
32 परस तुम्हारा प्राण,
33 निराकार जब तुम्हें,
34 मनुष्य की एवरेस्ट विजय पर,
35 फूल की सारी कहानी,
36 नसेनी,
37 अब युद्ध नहीं होगा,
38 जीवन जल !
39 फूलों का विद्रोह,
40 सभ्यता कहाँ आ गई !
41 यह हृदय है,
42 सत्य का निर्माण करती,
43 प्राण की धडकन,
44 दिव्य सुमन (Rose of God) का रूपान्तर,
45 वृक्ष और आत्मा (Tree) कविता का अनुवाद,

46 जीवन और मरण (Life and Death) का अनुवाद,
47 निमंत्रण (Invitation) का हिंदी रूपान्तर
48 विजयगीत (Triumh song of Trichanku)
49 महालक्ष्मी
50 स्वप्नतरी (Dream - Boat) का हिंदी रूपान्तर।

कवि नीरज जी ने अपनी चौथी काव्य कृति 'प्राणगीत' में जीवन के चार सत्य उद्घाटित किए है। वह हैं - सौन्दर्य, प्रेम, मृत्यु और मूख। इससे यह बात साबित होती है कि, नीरज जी यथार्थवादी कवि है। उन्हें आम आदमी की पीड़ा सताती है। इसकारण आम आदमी की समस्याएँ उनके काव्य का विषय बन जाती है। यही 'प्राणगीत' काव्यकृति की सार्थकता है।

2.1.8 दर्द दिया है :-

समय के साथ इन्सान की पहचान भी बदल जाती है, यह बात सौ फिसदी सही है। वरना सामान्य स्थिति का चित्रण करनेवाले नीरज जी दिल में दस्तक देनेवाली रचनाएँ कैसे बना पातें ? पाँचवी काव्य कृति का सृजण करते समय 'दर्द दिया है' नाम का चुनाव करना ही किताब की सफलता सिद्ध करता है। इसी कारण सन 1956 का समय 'दर्द दिया है' को अपनी बाहों में समाने के लिए बेकरार था। इस रचना का दृष्टिकोण भी सबसे बड़ा था। शायद अपनी काबिलियत के आकारपर ही इस रचना के दृष्टिकोण का आकार तय था।

कविता के बारे में अपनी क्या राय है, यह नीरज जी ने विचारों के माध्यम से व्यक्त किया है - " मैंने कविताओं की अपेक्षा गीत अधिक लिखे हैं और मेरे गीत लोकप्रिय भी हुए हैं - यह भी सत्य है। अधिकांश लोग उनकी लोकप्रियता का श्रेय मेरे कविता पाठ के ढंग को देते हैं। कुछ हद तक यह भी सत्य है, पर उनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है उनकी निर्झर सी अबाध गति और स्वाभाविक भाषा में गुँथी हुई स्वाभाविक अनुभुति। " [22]

कवि नीरज जी का यह मानना है कि, चाहे भाषा हो या फिर अर्थ संकेत की स्वाभाविकता, उसमें शब्द का स्थान महत्त्वपूर्ण ही रहता है। साथ ही कवि अपने आप को वाद - निरपेक्ष समझते हैं। उनके विचार इस प्रकार हैं - " प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा अन्य वादों के रूप में जो विवाद आज हिन्दी में प्रचलित हैं उनमें मेरी आस्था नहीं है। यद्यपि मैं प्रगति को जीवन का इष्ट मानता हूँ, और न किसी सिद्धान्त विशेष से सम्बंधित प्रयोग का हिमयती ! जीवन के वाक्य पर विराम चिन्ह नहीं रखा जा सकता, उसको बाँध देना उसकी गति को अवरूद्ध कर देना है। साहित्य जीवन का उपनाम है। मेरी दृष्टि में वही साहित्य श्रेष्ठ है जो हमें हमारे व्यक्तित्व के संकुचित घेरे से निकालकर अधिक से अधिक विश्व मानवता के निकट ले जाता है। " [23]

इस रचना में कुछ मिलाकर चौवन कविताओं को एकत्रित किया गया है। और एक सौ छब्बीस पृष्ठों पर छाया है। इसमें संकलित कविताएँ निम्न हैं -

1 दर्द दिया है,
2 मेरा गीत दिया बन जाये,
3 मस्तक पर आकाश उठाये,
4 हजारों साली मेरे प्यार में,
5 छः रूबाइयाँ,
6 तुम दीवाली बनकर जग का तम दूर करो,
7 दुनियाँ के घावों पर मरहम जो न बने,
8 तिमिर ढलेगा,
9 धरा को उठाओ, गगन को झुकाओ,
10 चार विचार,
11 उदृजन ब़म्ब के परीक्षण पर,
12 आदि पुरूष,
13 दो रूबाइयाँ,
14 आज जी भर देख लो तुम चाँद को,
15 विरह रो रहा है, मिलन गा रहा है,
16 उसकी अनगिन बूंदो में स्वाँती बूंद कौन ?
17 वह द्वार सुब़ह ने खोल दिया,
18 एक विचार,
19 दो रूबाइयाँ,
20 चिर विरहिणी,
21 एक तेरे बिना प्राण ओ प्राण के !
22 सावन के त्यौहार में,
23 मन क्या होता है,
24 याद तुम्हारी,
25 चाह मंजिल की सिर्फ,
26 पापिहा उठा पुकार पिया नहीं आये !
27 तस्वीर बन गया,
28 लगन लगाई,
29 जिस दिन तेरी याद न आई,
30 तब तुम आये,
31 प्राण ! मन की बात,
32 तू उठा तो उठ गई सारी सभा,
33 ओ बादर कारे,
34 जा में दो न समाएँ,
35 मैं तो तेरे पूजन को,
36 आज मेरे कंठ में,
37 मेरे जीवन का सुख,
38 गीत,

39 इस द्वार जाऊँ,
40 सात मुक्तक,
41 जीवन सत्य,
42 गीत,
43 गीत,
44 गर कलम न छीनी गई,
45 अमर वह व्यक्ति, अमर व्यक्तित्व,
46 मिट्टी वाला,
47 अहं की कारा,
48 मैं कवि नहीं हूँ,
49 देश के करोड़ों बेकारों से !
50 स्वर्ग दूत से,
51 Life and Death
52 Rise up! Rise up! on Love - in crenate glory of Everest
53 The Trial
54 न बनने दो !

प्रस्तुत रचना में कवि नीरज जी की 'मेरा गीत दिया बन जाए' कविता काफी प्रभावी रही है। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ -

"अंधियारा जिससे शरमाये,
उजियारा जिसको ललचाये,
ऐसा दे दो दर्द मुझे तुम
मेरा गीत दिया बन जाये ! "[24]

इन पंक्तियों में कवि ने दर्द को भी वरदान की तरह माँगा है। वह चाहते हैं कि, दूसरों से उन्हें इतना गहरा दर्द मिले की जिसके आगे की कोई सोच भी न सके। उस दर्द से उभरते हुए शब्द एक ऐसी कविता को जन्म देंगे, जो टूटे हुए इन्सान की उम्मिदें बढ़ा सकें। उसे सही रास्ता दिखा सकें और दिप की भाँति दूसरों के हित में जल सकें।

इसप्रकार कवि ने 'दर्द दिया है' काव्यकृति में मानवता को जागृत किया है और लोगों की चोट पर दवा लगाने का कार्य किया है।

2.1.9 दो गीत :-

काव्य कृति का नाम ऐसा होना चाहिए कि, सबकुछ उसमें समा जाए। 'दो गीत' नाम पढ़ने के साथ कोई भी समझ सकता है कि, इस रचना में केवल दो गीत संकलित किए गए हैं। साधारण सी बात है कि, दो गीत होंगे तो उनका आकार भी काफी बड़ा रहेगा। तो यह सब बाते कवि नीरज जी की व्यवहार कुशलता को सामने लाती हैं। यह नया अविष्कार प्रकाशित किया गया सन 1958

के जुलाई में और जिसे नाम दिया गया 'दो गीत'।

अपनी इस रचना की विशेषता को बताने हेतु कवि नीरज जी को 'निवेदन' भी प्रस्तुत करना पड़ा। जिसमें उन्होंने बताया है - " इस पुस्तक के सम्बन्ध में अपने पाठकों और आलोचकों से मुझे केवल इतना ही निवेदन करना है कि यदि वे मेरी इन दोनों कविताओं का मूल्यांकन मेरी आज की रचनाओं के संदर्भ में न करें तो अच्छा होगा क्योंकि मेरी अब की रचनाओं और इन दोनों कविताओं के बीच समय का एक बहुत लम्बा व्यवधान है। मृत्यु गीत 1949 - 50 की रचना है, जब मैंने अपना स्वतंत्र पथ निर्माण तो कर लिया था किन्तु मेरे पाँवों से लगी कुछ अन्य राजमार्गों की धूल पूरी तरह नहीं छूट पाई थी और 'जीवन गीत' 1945 के आसपास की रचना है जब में कविता लिखना सीख रहा था। वास्तव में जीवन गीत स्वतंत्र रचना नहीं है, बल्कि उस समय के लिखे हुए शांति लोक नामक मेरे खंड काव्य का एक अंश है जिसका सम्बन्ध 'प्रकृति पूरूष' नामक सर्ग से है। इस खंड काव्य की रचना मैंने कामायनी की शीतल किन्तु ज्ञान गंभीर छाया में की थी इसलिए अनिवार्य रूप से इसकी भाषा शैली पर उसका प्रभाव पड़ा है। इसे प्रकाशित करने की मेरी इच्छा नहीं थी किन्तू मित्रों का आग्रह जब आज्ञा तक पहुँच गया तो विवश होकर मुझे इसे छपाना पड़ा। शांतिलोक लिखकर भी इसलिए नहीं छपाया कि उसमें से बहुत कुछ छपने योग्य नहीं था - जितना छपने योग्य मुझे जँचा उतना यहाँ प्रस्तुत कर दिया है। "[25]

निवेदन को पढ़ने के बाद कवि नीरज जी के आदर्श विचार, मित्रप्रेम और समाज के प्रति उत्तर दायित्व के गुण हमारे सामने आ जाते हैं। प्रामाणिक स्वभाव के कारण उन्होंने रचना की कमियों को हमारे सामने रखा है और रचनाकाल की परिस्थिति को भी बयाँ किया है। दो गीतों में कौनसी भिन्नता है यह सामने रखते हुए इनकी सार्थकता की ओर इशारा भी किया है। यही गुण इन्सान को आदर्श व्यक्ति बनाते हैं।

'दो गीत' के बारे में डॉ. सुधा सक्सेना का मत है- " 'मृत्युगीत' का कवि पूर्णतः मृत्युवादी है। जीवन के कटु कलुष ने उसे इनता विक्षुब्ध, इतना जर्जर और इतना आस्थाहीन बना दिया है कि वह मृत्यु को ही सत्य मान बैठा है। प्रकृति में हर और उसे अपने सत्य के विघटन का ही दृश्य दिखाई देता है। गुलाब, बुलबुल, सांझ प्रातः, नदी निर्झर सबकी एक निश्चित निथति मृत्यु ही है। जीवन में सर्वत्र उसके ह्रदय का ही हाहाकार हर कंठ से फुट रहा है। मृत्यु गीत की ईमानदारी उसकी सबसे बडी विशेषता है, वह जीवन की अमरता और प्रेमजन्य सम्बन्धों पर व्यंग्य है। "[26]

डॉ. सुधा सक्सेना जी के विचार कवि नीरज जी के प्रति पूर्व दूषित जान पड़ते हैं। क्योंकि उन्होंने इस रचना की केवल बुराई ही की है। मगर अन्य विचारकों का मानना है कि यह रचना ह्रदयस्पर्शी है। साथ ही व्यंग्यात्मकता के कारण यह सजीव और सरस बन गई है।

श्री. क्षेमचन्द्र 'सुमन' जी का मानना है कि - " अपने मृत्यु में नीरज मे जहाँ अमरता पर व्यंग्य किया है, वहां जीवन की यथार्थवादी दृष्टि का अंकन करके मरते हुए मानव का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी किया है।... नीरज का कवि जहाँ मानव के जीवन का तटस्थतापूर्वक मूल्यांकन करने में सफल हुआ है, वहाँ उसने संसार को आत्मा की अमरता का संदेश भी दिया है और मृत्यु की समाजवादी दृष्टि की

प्रतिष्ठापना भी की है। "[27]

रचना वही है, कवि वही हैं परंतु मूल्यांकन करनेवाले व्यक्ति अलग होने के कारण विचारों में कितना बदलाव आया है, यह आप देख सकते हैं। अगर रचना में कुछ खासियत न रहती तो 'सुमन' जी भी इसकी निंदा करते। मगर उनके द्वारा इसको आदर मिलना इस बात का पुख्ता सबूत है कि, यह रचना आदर्श है।

'दो गीत' रचना के 'मृत्युगीत' में छह सौ बीस पंक्तियाँ हैं तो 'जीवन गीत' में छह सौ सोलह। दोनो में अपने विषय को पूरी ताकद के साथ प्रस्तुत किया है। और विषय की तह तक जाकर उसे हमारे सामने प्रकट करने का प्रयास किया है। कवि नीरज जी ने अपने स्वभाव के अनुसार विषय को पूरी तरह से जाँच - परख कर रचना के लिए चुना है। इसी कारण 'दो गीत' में 'मृत्युगीत' को नीरज जी की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। इतने कठीन विषय को आसान तरिके से हमारे सामने रखना कवि नीरज जी की विशेषता है।

2.1.10 आसावरी :-

कवि नीरज जी के लिए सन 1958 काफी सौभाग्यशाली रहा। 'आसावरी' नामक सातवीं रचना को जन्म देने के लिए यही समय सही था। इस रचना के नाम के साथ भी कोई खिलवाड़ न करते हुए नीरज जी ने दोबारा प्रकाशित कृति का नाम न बदलना निश्चित किया। इस रचना के आरंभ में कवि ने किसी भी प्रकार की प्रस्तावना नहीं दी। किन्तू हर कविता के पहले उससे संबंधित चित्र अवश्य दिया। चित्र का प्रयोग इस कृति में पहली बार हुआ इस कारण इसे सचित्र कृति माना गया।

प्रस्तुत रचना में कुल अट्ढाईस कविताओं को सम्मिलित किया गया है -

1 दीप और मनुष्य,
2 हर दर्पन तेरा दर्पन है,
3 अधिकार सबका है बराबर,
4 यदि वाणी भी मिल जाए दर्पन को,
5 ओ प्यासी अधरोंवाली,
6 कोई मोती गूंथ सुहागिन,
7 विदा क्षण आ पहुँचा,
8 बसंत की रात,
9 प्यार न होगा,
10 दूर नहीं हो,
11 पाती तक न पठाई,
12 धनियों के तो धन हैं लाखों,
13 स्वप्न झरे फूल से,
14 हम सब खिलौने हैं,
15 ओ प्यासे !

16 स्नेह सदा जलता है,
17 बुलबुल और गुलाब,
18 अस्पृश्या,
19 सिक्का,
20 अमरीकन खिलौने,
21 जनम का उपहार,
22 याद न आएगी,
23 फूल झर गया,
24 तुम सब आना,
25 जनपद की धूल,
26 दुख के दिन,
27 नई सभ्यता,
28 तुम मुझे भूल जाना !

प्रस्तुत रचना में छब्बीस कविताएँ हैं और दो गद्य काव्य। मगर गद्य काव्य की मीठास कविता को भी पीछे छोड देती है। इसके उदाहरण के लिए 'तुम सब आना' का कुछ अंश दे रहे हैं - " तांद्रेल पलकों की घनी छांह में, तुम्हारे प्रतीक्षा पंथ पर जब अहर्निशि, अकंपित जलते हुए, दिवा - निशा की अभिसार - बेला में, जब मेरे नयनों के नीलम प्रदीप में अश्रु स्नेह की अंतिम बूंद, रूप - ज्योति की अंतिम किरण, धूप गंध को अंतिम सुगंधि श्वास शेष रह जाए और पुतलियाँ पथराने लगें, तब सूर्य का उज्ज्वल मुकुट मस्तक पर लगाए, ऊषा का गुलाबी हास अधरों पर बिखेरे, सद्यः प्रस्फुटित प्रसून अलकों में गूँथे, काकली का कलराग कंह में भरे, तुम एक बार केवल एक बार, क्षण भर के लिए आकर मुझे अपनी बाँकी साँकी दिखा जाना, जिससे कि खुलती कली की पहली शर्म से मैं तुम्हारा स्वागत कर सकूं, शबनम के रूपहले मोतियों का हार तुम्हें पहनाकर, तुम्हारा श्रृंगार कर संकू, सहर की नाजुक नसीम से तुम्हें गुदगुदा सकूं और तम से अनन्त लोक में जाने से पूर्व प्रकाश के उद्‌गम पुंज का साक्षात दर्शन कर सकूं। "[28]

'आसावरी' की कविताओं में कहीं पर ऐसा लगता है कि, कवि निराश हुआ है। मगर अन्य कविताओं के कारण इस निराशावाद को थोडा नजरंदाज किया जा सकता है। 'आसावरी' की कुछ कविताओं की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

"मूढ । खिलता फूल यदि निज गंध से
मालियों का नाम फिर चलता कहाँ ?
मैं स्वयं ही आग से जलता अगर
ज्योति का गौरव तुझे मिलता कहाँ ? "[29]

'दीप और मनुष्य' कविता की पंक्तियों में कवि ने एक दूसरे पर निर्भर रहने की नियति का चित्रण किया है।

"हर दर्पन तेरा दर्पन है, हर चितरन तेरी चितवन है,
मैं किसी नयन का नीर बनूँ, तुझको ही अर्ध्य चढाता हूँ ! " [30]

'हर दर्पन तेरी दर्पन है' कविता में कवि मानता है कि, जो कुछ है वह तुम्हारा ही है। अगर मैं कुछ कर पाता हूँ तो वह तुम्हें मात्र अर्पन करता हूँ।

"फूल पर हँसकर अटक तो, शूल को रोकर झटक मत,
ओ पथिक ! तुझ पर यहाँ अधिकार सबका है बराबर !
कोस मत उस रात को जो पी गई घर का सबेरा,
रूठ मत उस स्वप्न से जो हो सका जग में न तेरा,
खीज मत उस वक्त पर, दे दोष मत उन बिजलियों को -
जो गिरीं तब - तब कि जब - जब तू चला करने बसेरा,
शाह हो पैदल कि राह पर वार सबका है बराबर !" [31]

'अधिकार सबका है बराबर' कविता में कवि कहता है कि, हे मानव आनेवाले संकटों को दोष मत दो। उनका तुमपर अधिकार है, जिस प्रकार खुशियों का तुमपर अधिकार है। जीवन में आनेवाले हर वक्त का तु हंसकर सामना कर।

"चाहे सागर को कंगन पहनाओ -
चाहे नदियों की चूनर सिलवाओ,
उतरेगा स्वर्ग तभी इस धरती पर
जब प्रेम लिखेगा खत परिवर्तन को !
सुन्दरता खुद से ही शरमा जाए
यदि वाणी भी मिल जाए दर्पण को !" [32]

'यदि वाणी भी मिल जाए दर्पण को' कविता में कवि ने आज के परिवर्तनशिल जीवन का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है। सच को जहाँ स्थान नहीं, वह दूनिया अस्तित्व के योग्य नहीं है, यही बात समझायी है।

"बादल खुद आता नहीं समुन्दर से चलकर,
प्यास ही धरा की उसे बुलाकर लाती है,
जुगनू में चमक नहीं होती, केवल तम को
छूकर उसकी चेतना ज्वाल बन जाती है,
सब खेल यहाँ पर है धुन का,
जग ताना - बाना है गुन का,
ओ सौ गुनवाली। ऐसी धुन की गाँठ लगा
सब बिखरा जल सागर बन बनकर लहराए !" [33]

'ओ प्यासे अधरोंवाली' कविता में कवि ने बताया है कि, कोई भी कार्य अपने आप नहीं होता, उसके पिछे किसी की प्रेरणा छुपी होती है। और उस प्रेरणा को जागृत करने का प्रयास किया गया है।

इसप्रकार 'आसावरी' रचना में आदर्श कविताओं का संकलन देखने को मिलता है।

2.1.11 नीरज की पाती :-

अर्थपूर्ण रचनाओं का संकलन कर के पाठकों के दिल जितनेवाले कवि नीरज जी ने अपनी काव्य प्रतिभा से अगला काव्य पुष्ठ तैयार किया। उसको नाम दिया गया - 'नीरज की पाती'। सन 1958 के समय का यह और एक अविष्कार माना जाएगा। इसकी लोकप्रियता ने कवि को आम लोगों के दिल में बसेरा करनेपर मजबूर कर दिया। इस रचना के आरंभ में कवि ने 'दो शब्द' लिखे हैं - " प्रस्तुत संग्रह की पातियां समय समय पर भिन्न भिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं और वे पर्याप्त लोकप्रिय भी हुई हैं इसलिए यहाँ इनके विषय में कोई लम्बी चौड़ी भूमिका देने की आवश्यकता मूझे प्रतीत नहीं होती। इस संग्रह की आरंभ की कुछ पातियों में हिन्दी के लिये सर्वथा नवीन मैंने उर्दू के एक छंद का प्रयोग किया है। इस छंद का वजन हिन्दी के प्रचलित छन्दों के समान मात्राओं पर आधारित न होकर लय (बहर) पर निर्भर रहता है, इसलिए शायद उर्दू छंद योजना से सर्वथा अनिभिज्ञ पाठकों को इसमें दोष दिखाई दे, किन्तु ऐसी बात नहीं हैं। " [34]

सन 1999 के नवीन संस्करण में एक सौ चवालिस पृष्ठ हैं और तीस कविताएँ तथा अठारह गीतिकाएँ हैं। उनके नाम निम्न हैं -

1 मुक्तक,
2 नीरज की पाती,
3 आखिरी खत,
4 आज की रात,
5 शाम का वक्त है,
6 तेरा जन्म दिन,
7 कानपुर के नाम,
8 प्यार करके निभाना,
9 अज्ञात साथी के नाम,
10 अजनबी दोस्त,
11 नील की बेटी के नाम,
12 कश्मीर के नाम,
13 पाकिस्तान के नाम,
14 दक्षिणी अफ्रीका की रंग भेदी नीति के नाम,
15 कल्पना के नाम,
16 पुरानी पीढ़ी के नाम नयी पीढ़ी का निवेदन,
17 समकालीन गीतकार के नाम,
18 पुर्तगाल के नाम,

19 बुझते हुए दीपकों के नाम,
20 कालिदास के नाम,
21 साँसों के मुसाफ़िर के नाम,
22 फ़िरक़ापरस्तों के नाम,
23 गीतकार का जन्म,
24 यदि वाणी भी मिल जाए दर्पण को,
25 विदा - क्षण आ पहुँचा,
26 धनियों के नाम,
27 ओ प्यासे,
28 मिल गया जनम,
29 तुमको तो मेरी याद न आएगी,
30 हँसकर दिन काटे सुख के,
31 गीतिकाएँ,

कवि नीरज जी की हर कविता अलग विषय को सामने रखती है, इस कारण 'नीरज की पाती' रचना में अनेक विषयों को प्रस्तुत किया है। कविता में व्यक्तिगत स्तर से लेकर सामाजिक स्तर तक का चित्रण, व्यक्तिगत प्रेम से लेकर विश्व प्रेम की अभिव्यंजना और व्यष्टि एवं समष्टि का एकत्रिकरण कवि की अलौकिक प्रतिभा को प्रकट करता है।

नीरज जी की ग़ज़लें इतनी सशक्त जान पड़ती हैं कि, विषय को सिधे दिलों - दिमाग पर छाने के लिए मजबूर कर देती हैं। 'नीरज की पाती' में ऐसी ही ग़ज़लों को सम्मिलित किया हैं। उनके कुछ उदाहरण इस प्रकार -

"अब तो इक ऐसा वरक़ मेरा - तेरा ईमान हो
इक तरफ़ गीता हो जिसमें इक तरफ़ क़ुरआन हो।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमज़ान हो।
मज़हबी झगड़े ये अपने आप सब मिट जायेंगे
और कुछ होकर न गर इन्सान बस इन्सान हो।
अपना ये हिन्दोस्ताँ होगा तभी हिन्दोस्ताँ
हाथ में हिन्दी के उर्दू का कोई दीवान हो।" [35]

" नीरज की ग़ज़लों में राजनीति में व्याप्त सिध्दान्तहीनता, सामाजिक विसंगतियों, आतंकवाद, अलगाववाद, साम्प्रदायिक सद्भाव चाहते हैं। उनकी ग़ज़लों की भाषा में हमें उर्दू के शब्दों का प्रयोग नहीं किया है। बल्कि बोलचाल की भाषा को ही उन्होंने अपनी ग़ज़लों में अपनाया है। शिल्प की कसौटी पर भी उनकी ग़ज़लें खरी उतरती हैं। " [36]

आज - कल अपने आप को शरीफ कहने वाले लोग ही सच में बदचलन होते हैं। उनके कहने और करने में अंतर होता है। इस बात को कवि नीरज जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है -

"बदन प' जिसके शराफत का पैरहन देखा
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा
जुबाँ है और, बयाँ और, उसका मतलब और
अजीब आज की दुनिया का व्याकरण देखा।" [37]

" हिन्दू - मुस्लिम के बीच आपसी सद्भाव बढ़े, भाईचारा निर्माण हो यह बहुत जरूरी है। अतः एक दूसरे के प्रति स्नेह - भाव जरूरी है। दोनों की एकता और सामंजस्य पर ही देश की एकता निर्भर है। नीरज के मतानुसार भारतवर्ष को यदि संपन्न और खुशहाल बनाना है, तो देश में एक ऐसे मज़हब को चलाना जरूरी है जिसमें इन्सान को इन्सान बनाने की बात हो। कुछ ऐसे फूलों के पौधों को विकसित करने की आवश्यकता है, जो न केवल अपने बल्कि पड़ोसी के घर को भी महका दें। " [38]

"अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाये।
जिसकी खुशबू से महक जाये पड़ोसी का भी घर
फूल इस किस्म का हर सिम्त खिलाया जाये।" [39]

" देश में धर्म के नाम पर होने वाले विवादों के कारण भी देश की एकता और सामंजस्य में बाधा निर्माण होती है। देश की अखण्डता को चोट पहुँचती हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दू हो या मुसलमान सभी इस देश के नागरिक हैं। इसलिए मज़हबी झगड़ों में उलझना नहीं चाहिए। आज हिन्दू या मुसलमान होने की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी इन्सान होने की। यदि मनुष्य कुछ और न होकर केवल इन्सान हो जाये तो सारे विवाद अपने आप ही समाप्त हो जायेंगे।
आपसी सद्भाव और सामंजस्य देश की उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इसके अभाव में देश पतन की ओर, बर्बादी की ओर बढ़ता है। पराये मुल्क ऐसी स्थितियों से लाभ उठाते हैं, हमें लड़वाकर तमाशा देखते हैं। अतःजरूरी है कि -" [40]

"मेरे दुख - दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाये।
जिस्म दो हो के भी दिल एक हो अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाये।" [41]

2.1.12 मुक्तकी :-

कवि नीरज जी की लोकप्रिय रचना 'नीरज की पाती' के भाँति दूसरी रचना भी सफल रही, जिसका नाम था - 'मुक्तकी'। इस रचना को पाठकों के बीच प्रकट करने के लिए सन 1960 की राह देखनी पड़ी। चार पंक्तियों में किसी विषय को बयाँ करना, मुक्तक है और 'मुक्तकी' में ऐसे एक सौ एक मुक्तक एकत्रित किए हैं। दिमागवालों के दिमाग में नए विचार न आयेंगे तो आश्चर्य ! उन्होंने कह दिया कि,

विविध विषयों को प्रकट करनेवाली यह रूबाइयाँ ही हैं। और साथ में जोड़ दिया कि, उर्दू की रूबाइयाँ हिन्दी में लाना नीरज जी का श्रेष्ठतम कार्य रहा है। उन्होंने हिंदी रूबाइयों के लेखक और चहैते भी बना लिये हैं। इतना कहने के बाद अगर नीरज जी की बोलती बंद न हो जाए तो आश्चर्य।

'मुक्तकी' के बारे में डॉ. दुर्गाशंकर मिश्रजी के विचार - " सामान्यतया नीरज की 'मुक्तकी' में विष - वैविध्यता के ही दर्शन होते हैं और संक्षेप में ही केवल चार पंक्तियों में कोई सारगर्भित और चमत्कारपूर्ण बात कही गयी है। इस प्रकार 'मुक्तकी' में बचपन एवं, प्रेम एवं सौन्दर्य धर्म एवं दर्शन प्रकृति एवं मनुष्य और स्वतंत्रता एवं विद्रोह आदि अनेक विषयों को समेटा गया है तथा विभिन्न वैयक्तिक, साहित्यिक एवं सामाजिक समस्याओं के निरूपण की ओर कवि नीरज का ध्यान गया है। कहने का अभिप्राय यह है कि 'मुक्तकी' में अनेक विषयों का वर्णन हुआ है और यह काव्य कला कुशलता का भी यथेष्ट परिचय देती है। " [42]

2.1.13 लिख लिख भेजत पाती :-

कवि नीरज जी के जीवन में कई इन्सान अपना अलग महत्व रखते हैं। उनमें से एक नाम है - नीलिमा। नीलिमा कवि नीरज जी के कविताओं की दिवानी है और नीरज जी की भी। कविताओं से प्रभावित होकर खत लिखने से उनकी बातचित का आरंभ हुआ और जीवन के विचारों तक दोनों आपस में विचार-विमर्श करते रहें। नीलिमा के पत्र अंग्रेजी में रहते थें। उन्हीं का हिंदी अनुवाद कर के नीरज जी ने 'लिख लिख भेजत पाती' रचना को सन 1956 में जन्म दिया।

नीलिमा ने कवि नीरज जी के व्यक्तित्व के बारे में कहा है - " तुम तो रंग बिरंगे प्रकाश से जगमगाते हुए अपने महल में सदैव ही मित्रों और प्रशंसकों से घिरे रहते होगे और तुम्हारे लिए प्रकृति का प्रत्येक कोष उन्मुक्त होगा। यदि उन असंख्य मित्रों की संख्या में एक नाम जुड़ जाए या घट जाए, तो तुम्हारे निकट उसका कोई महत्व नहीं है। इसलिए मैं अपने एकान्त भवन में अकेली बैठी हूँ और बैठी रहूँगी। जिस दिन तुम्हारे मित्र तुमसे विदा लेकर चले जाएँ और तुम्हारा भवन सूना हो जाए, तब उस एकाकीपन में तुम मुझे बुलाना और तुम्हारे ही शब्दों में तब 'मैं दर्शन बन आऊँगी। " [43]

अगर कोई कवि का चहैता इतने अच्छे विचार लिख सकता है, तो उस कवि की प्रतिभा कितनी विशाल होगी, इसका हम अंदाजा लगा सकते हैं। इससे हमें कवि नीरज जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में पता चलता है।

2.1.14 हिन्दी रूबाइयाँ :-

चन्द लब्जों में सारा फसाना बयान करना ही रूबाई है। रूबाई यह उर्दू की देन है। इन्हें हिन्दी में लाने की कोशिश कवि नीरज जी ने कही है। इसके लिए कई कवियों की रूबाइयों को एकत्रित करके 'हिन्दी रूबाइयाँ' नामक संकलन प्रकाशित किया गया। जिसके लिये उचित तिथि सन 1963 थी। इस रचना में कवि की पाँच रूबाइयों को शामिल किया गया है। अन्य रूबाइयाँ लिखनेवाले कवि हैं - " आनंद मिश्र, इंदीवर, उदयशंकर भट्ट, गोपाल प्रसाद व्यास, निरंकार देव सेवक,

नीरज, परमेश्वर द्विरेक, बलदेवप्रसाद मिश्र, बलवीर सिंह 'रंग', भारत भूषण, रमा सिंह, रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल', रामा नंद दोषी, रामावतार त्यागी, वीरेन्द्र मिश्र, शिव मंगल सिंह 'सुमन', सरस्वती कुमार दीपक, हरि कृष्ण प्रेमी आदि। '' [44]

हर रचना से पूर्व अपने विचार प्रकट करना कवि नीरज जी की आदत बन चुकी थी। इसी कारण 'हिन्दी रूबाइयाँ' रचना से पूर्व कवि ने अपनी प्रस्तावना दी है। इससे रचनाकाल की परिस्थिती समझमें आ जाती है - '' हिन्दी में रूबाई अभी प्रयोगकालीन अवस्था में ही है; और साथ ही, उसकी जो तर्जे बयानी हैं वह भी हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है, इसलिए यह आशा करना कि इस संग्रहीत रूबाइयों में उर्दू जैसी शोखी और सजावट होगी, गलत है। फिर भी इस संग्रह में कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने सही माने में रूबाइयाँ लिखी हैं और जो उर्दू की किन्हीं भी श्रेष्ठ रूबाइयों के बराबर रखी जा सकती हैं। '' [45]

इसप्रकार प्रस्तुत संकलन में रूबाइयों को संकलित किया गया है। इनकी महत्ता प्रस्तावना पढ़ने के बाद समझमें आ जाती है।

निष्कर्ष :-

लोगों की नब्ज पहचानकर आदर्श रचनाओं का निर्माण करने से कवि नीरज जी लोकप्रियता की बुलंदीपर पहूँचे हैं। उनके विचारों के साथ - साथ काव्य का प्रभाव भी दिल पर दस्तक देता है। उनकी प्रत्येक रचना, उनका व्यक्तित्व और कृतित्व जगमगाने का कार्य कर रही है।

जीवन में अबिरत संघर्ष होने के बावजूद, उसी कमजोरी को अपनी ताकत बनाकर कवि नीरज जी ने अपने जीवन को सफल बनाया, कामयाब बनाया। होसले बुलंद हो तो, कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएँ, विजय हमेशा प्रयत्न करनेवालों की होती है, इसी बात को उन्होंने साबित कर दिखाया है।

वास्तववादी चित्रण करना यह अपने आप में एक कला मानी जाती है। जो कवि नीरज जी के पास है। साथ ही अपने अनुभवों की नजाकत भी उसमें शामिल कर के चित्रण को लाजवाब बनाना अच्छे कवि का लक्षण है। आज कवि नीरज जी के लाखों चाहनेवाले हैं, यह सबूत है उनकी रचनाओं की सार्थकता का। उनके गीतों को आज तक हम भूल नहीं पाये हैं क्योंकि उनमें जीवन का यथार्थ चित्रण है। आनंद की अनुभूति है, दर्द की टिस है, कुछ पाने की चाह है, कुछ खोने का इरादा है और अपना जीवन अलग अंदाजसे जिने का नया ढंग है।

समाज में जागृति लाने के साथ - साथ समाज विकास की ओर बढ़ता रहे, इसके लिए कवि नीरज जी ने प्रयत्न किए हैं। रास्ता पार करते समय कौन - सी बातें आवश्यक हैं, यह उन्होंने अपने गीतों में बताया है और जीवन में जन्म - मृत्यु की निश्चितता भी उन्होंने गीतों में बताई है। इससे समझ में आता है कि, कवि नीरज जी ने हमारे जीवन को ही गीतों में जकड़कर रखा है।

संघर्ष के साथ जीवन का आरंभ होते हुए भी, मृदुलता को पाना यह कवि नीरज जी का जीवन पथ है। मुश्किलों को पार कर के सफलता पाना, उनका इरादा है। और अंधेरे से रोशनी की ओर जानेवाला रास्ता बनाना, उनका मकसद है। इसी कारण कवि नीरज जी एक महान व्यक्ति हैं।

KOLHAPUR

संदर्भ सूची

1 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.24,25 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
2 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.25 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
3 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.26 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
4 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.34 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
5 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.35 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
6 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.41 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
7 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.41 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
8 www.Kavyalay.com
9 www.Kavyalay.com
10 www.Kavyalay.com
11 www.Kavyalay.com
12 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.144 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई
13 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.113,114 - हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
14 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.144 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई
15 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.139 - हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
16 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.124 - हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
17 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.164 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई
18 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.116 - हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
19 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.210 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई
20 www.Poet Neeraj.com
21 www.Poet Neeraj.com
22 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.53 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
23 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.53 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
24 www.Kavyalay.com

25 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.58,59 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

26 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.59,60 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

27 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.60 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

28 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.62,63 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

29 www.Bhartiya Sahitya Sangrah.com

30 www.Bhartiya Sahitya Sangrah.com

31 www.Bhartiya Sahitya Sangrah.com

32 www.Bhartiya Sahitya Sangrah.com

33 www.Bhartiya Sahitya Sangrah.com

34 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.67 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

35 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.125 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

36 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.64 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई

37 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.120 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

38 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.187 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई

39 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.130 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

40 साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल - डॉ.मधु खराटे - पृ.207 -विद्या प्रकाशन - 2002 ई

41 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.130 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

42 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.71 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

43 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.81,82 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

44 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.82 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

45 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.82 - हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979